सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजयख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, मई-जून, 2016

कलवरी पर परमेश्वर की करुणा और सच्चाई

धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं, करुणा और सच्चाई तेरे आगे चलती है। क्या ही धन्य है वे जो आनन्द की ललकार को पहिचानते हैं। हे यहोवा, वे तेरे मुख के प्रकाश में चलते हैं। वे दिन भर तेरे नाम में आनन्दित रहते हैं, और तेरी धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाते हैं। (भजन संहिता 89:14-16)

परमेश्वर न्यायी है। परमेश्वर का यह एक गुण है जो हम उपेक्षित करके नज़र अन्दाज करते है। वह किसी भी तरह की कर्कशता या बदले या प्रतिशोध से, किसी भी रूप में हमें प्रतिफल नहीं देता है। वह न्यायी है। और न्यायी रहने में वह अनुग्रह से भरा है।

'धार्मिकता और न्याय तेरे सिंहासन के आधार हैं।' परमेश्वर स्पष्ट रूप से अच्छाई और बुराई, धार्मिकता औऱ अधर्म के बीच सीमांकन करता है।

कलवरी पर... पृष्ठ 2 पर

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

TV - Star Utsav

चैनल पर

हर **रविवारसुबह 7:30 से 8:00** बजे

यीशु: परमेश्वर का प्रेम और उद्धार

'वह उनका पूरा पूरा उद्धार करने में समर्थ है।' (इब्रानियों 7:28)

जब मैं ने सुन्दर सिंह के प्रचार को सुना था, मैं ने यह पाया कि अध्यात्मिक जीवन के कुछ मूल सच्चाइयों को, उन्होंने साफ- साफ जाहिर किया है। उन्होंने कहा, 'उद्धार सिर्फ पापों की माफी पाना ही नहीं बल्कि पाप से मुक्ति पाना है।' परमेश्वर की आराधना करने के लिए हम यहाँ है। हमारी जिन्दगी में कहीं पर भी पाप की गुलामी को जरा सा भी स्थान नहीं देना है। पूरी तरह से छुटकारा पाना हमारा लक्ष्य होना चाहिए, क्योंकि हमें यही छुटकारा देने के लिए यीशु मरे हैं। जब एक व्यक्ति पवित्र आत्मा द्वारा चलाये जाते अपना जीवन जीने लगता है, तो वह पाप से मुक्ति पाता है। जब वह पुनःजीवित होता है, वह अब पाप की तरफ खींचा नहीं जाता। जब यीशु हमारे जीवन में आ जाते है, हम सहज ही स्वर्गीय चीजों की ओर खींचे चले जायेंगे।

प्रकृति और इस पृथ्वी पर सब कुछ हमारे अधीन होना था। यीशु ने आंधी और समुद्र को डांटा और वे उसकी आज्ञा मानते हैं। यहोशू ने आदेश दिया और सूर्य उस समय तक थमा रहा जब तक लड़ाई समाप्त ना हुई। परमेश्वर के सेवक बनने से हम अपने स्वभाव पर भी स्वामी बन पायेंगे। जब पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहना, हमारे जीवन का सिद्धांत बनता है, तब हम पायेंगे कि हम प्रकृति पर शासन करते है। मसीह का परिणत स्वभाव आप में से उमड़ कर बहने लगेगा।

जब आप परमेश्वर के प्रेम से भरे हों, आपके चारों तरफ का संसार, स्वर्ग बन जायेगा। आप को कोई महान कार्य करने की जरूरत नहीं है। सिर्फ परमेश्वर के प्रेम से भरे रहें तब परमेश्वर का प्रभाव आप से विकीर्ण होगा। लोग आप की तरफ खींचे जायेंगे और उस प्रभाव से अपने आप को अलग नहीं कर पायेंगे। 'दस मनुष्य एक ... के वस्त्र का छोर पकड़कर कहेंगे, 'हमें साथ ले चलो, क्योंकि हमने सुना है कि यहोवा तुम्हारे साथ है।" (जकर्याह 8:23) हम विफल होते है क्योंकि हम में परमेश्वर के प्रेम का अभाव है। उच्चतम चीजों की खोज करो। उन्हें पाकर संपन्न बनकर घर लौट जाओ। इस दुनिया का सब से अमीर व्यक्ति वही है जो यीशु के प्रेम से भरा है।

मैडम गयोन जो फ्रांसीसी संत थी, वह परमेश्वर के प्रेम से भरी थी। एक दफा, चौपहिया गाड़ी में सवार उनको एक अंधकारमय जंगल से गुजरना पड़ा। वह जंगल चोरों का अड्डा था। उस गाड़ी और उसमें सवार अकेली औरत को देखकर, हिंसक और दुष्ट आदमी उस पर हमला

करने आये। उनके पास हथियार थे। जब वे नजदीक आये, उसकी आँखों से परमेश्वर का प्रेम झलकते देखा। वे पीछे हट गये। ऐसी औरत को उन लोगों ने कभी नहीं देखा था। उसको मारने के बजाय, वे उसका आदर-सम्मान करके प्यार करने लगे। ऐसी बदलने वाली शक्ति परमेश्वर के प्रेम में है। उसे पाओ और इस दुनिया में आप एक महान आशीष बनोगे। ईसाई का दूसरा नाम 'आशीष' है। परमेश्वर ने इब्राहिम से कहा, 'मैं तुझे आशिष दूँगा, इसलिए तू आशिष का कारण होगा!' एक अनोखी प्रतिज्ञा का यह कितना सुन्दर ऐलान है। और परमेश्वर ने इब्राहिम को एक आशिष का कारण भी बनाया, और वह भी सदैव के लिए! हमें अपने आप से पूछना है, 'क्या मैं एक आशिष का कारण हूँ? यहाँ तक की अपने बैरियों के लिए भी, क्या मैं एक आशिष का कारण हूँ? परमेश्वर हमारी मदद करे।

-एन. दानिय्येल।

कलवरी पर... पृष्ठ 1 से

और जो उनके बच्चे है वे भी वैसा ही करेंगे। वे दुष्टता से समझौता नहीं करेंगे। उनमें सच्ची न्याय-भावना होगी। वे नहीं चाहेंगे की अन्याय और दबाव बना रहें। आज हम ऐसे कई लोगों को देखते है, जब दुष्टता या अन्याय या लोभ या घूसखोरी या भ्रष्टाचार से उनका सामना होता है तब अनजान बनकर अपनी नज़र फेर लेते है। नहीं, परमेश्वर स्पष्ट रूप से ऐसे लोगों पर दण्ड लाता है जिनका नैतिक मूल्यों के प्रति कोई आदर नहीं है। इसी कारण, हम कोई भी निर्जीव देवता रखने का साहस ना करें। अपने हाथों से किसी भी देवता को बनाकर, उसे रखने का साहस हम ना करें। किसी मूर्ति को बनाकर उसे परमेश्वर कहने का साहस हम ना करे।

परमेश्वर, पवित्र परमेश्वर है। परमेश्वर की पवित्रता मूल विषय है, और ऐसे लोग भी है जो यह भी नहीं जानते की परमेश्वर पवित्र है ऐसे लोगों की गहराई नापी नहीं जा सकती। उनको सही दिशा का आभास नहीं होता। और उसको होगा भी नहीं। उनका दिशासूचक कम्पास गलत है। वे पूरी तरह से गुमराह है क्यों कि उनके मन में परमेश्वर नहीं है। जब यीशु मसीह हमारे हृदय में आते है, हम अपने चारों ओर न्याय देखना चाहेंगे - हमारे कानून के न्यायालयों में, हमारे न्यायाधीशों में, हमारे दफतरों में। हम किसी कमजोर व्यक्ति से अनुचित फायदा उठाना नहीं चाहेंगे। गरीबों को दबाया जाना देखना नहीं चाहेंगे। जब कोई किसी दूसरे को हानि पहुँचा रहा हो, यह देखकर, हम अनदेखी कर मुँह नहीं फेरेंगे।

आज हमारा आमना-सामना ऐसी परिस्थितियों से हो रहा है जहाँ लोग किसी भी विषय में भागीदार बनना नहीं चाह रहे है। मगर दूसरी ओर एक मसीही धार्मिकता से, न्याय से, करुणा से, इन सब विषयों से जुड़ा है। बाइबल यह कहता है कि करुणा और सच्चाई (परमेश्वर की) उनके आगे चलती हैं। अगर परमेश्वर तुम्हारे साथ है और परमेश्वर तुम्हारा निर्देशन कर रहा है, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा।

करुणा, अहा! कितना आश्चर्यजनक! एक पापी के लिए करुणा। परमेश्वर को दुख देकर, उनके हृदय को तोडने वाले आदमी के लिए करुणा। परमेश्वर के हृदय को तोड़ने का जवाबदार आदमी के प्रति करुणा। कलवरी का कारण - तुम्हारा और मेरा पाप है। सच्चाई कहती है, 'अब इस आदमी में कमी पाई गई है। यह आदमी स्वर्ग के राज्य में कभी भी प्रवेश नहीं कर सकता। यह आदमी उस सच्चाई के - जो मेरा कानून है, उसके विरुद्ध गया है। इसलिए स्वर्ग में इस आदमी के लिए जगह हो ही नहीं सकती।'

तब करुणा कहती है, 'हाँ, क्योंकि इस आदमी ने मान लिया है कि यीशु मसीह के क्रूस में उसके पापों की सजा का कार्य पूरा हुआ है। क्योंकि इस आदमी ने अपनी असलियत के बारे में स्वीकार किया है कि वह पापी है और परमेश्वर की महिमा से वंचित है, वह करुणा का पात्र है।' हमारा परमेश्वर कितना अद्भुत है। एक पापी के प्रति करुणा - मेरे और तुम्हारे लिए करुणा।

इसलिए हम अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित है। मरियम के गीत को याद करो, 'मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित हुई है।' (लूका 1:46, 47) आज हमारे आनन्दित होने का क्या कारण है? तुम जानते हो कि सांसारिक उत्तेजनायें तेजी से बीत जाती है। फलस्वरुप दुःख और पीड़ा को छोड़ जाती है। अपराध और लज्जा की भावना छोड़ जाती है। इस संसार की ज्यादातर खुशियाँ क्षणभंगुर और अल्पकालिक है। वे बीत जाती है औऱ एक कडुवे स्वाद को पीछे छोड़ जाती है। मगर एक आदमी जो

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

उद्धारक प्रभु यीशु मसीह में आनन्दित है, उसकी खुशी स्वार्थी है। तुम जानते हो कि यह अनुभव की जा सकती है मगर उसके बारे में व्यख्या नहीं की जा सकती। इसलिए बेहतर है कि तुम यीशु मसीह को पाओ और इस आनन्द को अनुभव करो - ऐसी खुशियाँ जो सर्वदा रहने वाली है, सुख जो परमेश्वर के दाहिना हाथ में है। ऐसा लगता है कि आज का धर्म, किसी भी कीमत पर और किसी को भी बलि चढ़ाकर जहाँ तक हो सके शीघ्रता से सुख प्राप्त कर रहा है। चाहे शवों को लांघना पड़े, जिन्दगियों को तबाह करना पड़े, कौमार्य को कुचलना पड़े, तो भी सुख पाना चाहते है।

अब इस तरह का सुख, यह स्वार्थी सुख सिर्फ दोष और दुःख को ही ला सकता है। बीमारी, दुर्गति और मृत्यु की प्रतिक्रिया को ही ला सकता है। इधर हमें कहा गया है, 'तेरी धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाते हैं।' जो परमेश्वर की धार्मिकता से प्यार करते है, उन्हें एक दाम चुकाना पड़ेगा। उन्हें भी जो धार्मिकता स्थापित कराना चाहें, कीमत चुकाने के लिए तैयार हो। और हमारी धार्मिकता को बनाये रखने के प्रयास में भी, अदा करने के लिए एक मूल्य है। प्रभु यीशु मसीह ने हम से कहा, 'तुम से घृणा करेंगे।' 'मेरे नाम के कारण सब तुम से घृणा करेंगे, परन्तु जो अन्त तक धीरज रखेगा उसी का उद्धार होगा।' (मत्ती 10:22)

अब धार्मिकता के लिए एक मूल्य अदा करना पड़ेगा। लोग शायद तुम से घृणा करें, झूठी निन्दा करके संदेह से तुम्हें देखेंगे। मगर तुम धार्मिकता के द्वारा महिमान्वित किए जाओगे। 'क्यों कि हम यीशु मसीह से भरे है, उन्होंने हमें परमेश्वर के पुत्र बनाकर अलग किया है। तुम्हें धार्मिकता का वस्त्र पहनाया गया है। प्रिय दोस्त, मेरा ये मतलब नहीं है कि यह एक सैद्धान्ति धार्मिकता है। बल्कि मैं एक प्रयोगात्मक धार्मिकता के बारे में जिक्र कर रहा हूँ। जब उस स्त्री ने जो बारह वर्ष से लहू बहने के रोग से पीड़ित थी, प्रभु यीशु को छुआ था, उनसे ताकत बहकर उस औरत में गई। तुम जानते हो कि सामर्थ उनसे निकली और वह स्त्री चंगी हो गयी। उसकी धार्मिकता एक स्वस्थ करने वाली धार्मिकता है। वह दोषी ठहरानेवाली धार्मिकता नहीं है, वह फरीसियों की धार्मिकता जैसी नहीं है, वह आशीष की एक नदी है - एक नदी जो धार्मिकता बहा लाती है।

- जोशुआ दानिय्येल।

प्रभु का एक दर्शन

प्रभु का एक दर्शन - ताहिर की पूरी जिन्दगी उलट-पलट हो गयी। उन्हीं की यह कहानी है।

ताहिर एक आदरणीय मुसलमान था। मुसलमानों के मक्का की यात्रा किया हुआ एक सुसम्मानित हाजी था। उसकी पत्नी ने भी वह किया था। इसीलिए जब उसकी बेटी मसीह में आई - तो ताहिर बहुत नाराज हो गया था। और जब उसकी पत्नी भी मसीह को मानने लगी तो वह और भी गुस्सा हो गया। जब उसके बेटे ने इस्लाम से मुँह फेर कर मसीह को अपनाया, क्रोध से वह भड़क उठा था। ताहिर ने अपने परिवार को इस्लाम में पुनः लाने की हर तरह से जोरदार कोशिश की। कुरान से उपदेश किया, गिरिजाघर में जाने पर पाबंधी लगाई, उनको पीटा और गुप्त पुलिस को सचेत करने की धमकी दी। नंगे हाथों उनको जान से मारने का भी धमकी दी। मगर इस सब का उन पर कोई असर ना था। उसके परिवार के लोगों ने मसीह को नहीं छोड़ा। बजाय वे ताहिर को छोड़कर विदेश पलायन हो गये।

जब परिवार छोड़ गया तो शुरु में बहुत गुस्से में रहा लेकिन बाद में वह अकेला महसूस करने लगा। अपनी उस निराशा में वह कुरान के छंद याद करने लगा और अपना पूरा ध्यान अल्लाह पर केन्द्रित किया जिसकी वह इतना लगान से सेवा करता था कि अपने परिवार तक को भी उसने डर के मारे भगा दिया। 'कृपया मुझे अपना मुँह दिखाना,' उसने याचना की। बाद की चुप्पी ने उसे यह संदेह करने में मजबूर कियाः शायद यह भगवान जिसकी वह उपासना कर रहा, उसका अस्तित्व है ही नहीं। और उसके परिवार वाले ही सही है। अल्लाह या फिर यीशु, किस पर विश्वास करे वह नहीं जानता था। या फिर बाइबल पर या कुरान कर। अंततः उसने कहाः मैं उस परमेश्वर पर विश्वास करूँगा जो खुद अपने आपको मुझ पर प्रकट होगा।'

ताहिर की प्रार्थनाओं का एक स्वप्न के जरिए जवाब मिला। सपने में उसने एक व्यक्ति को गधे पर सवार देखा। वह आदमी उसी की तरफ आया। उस आदमी को उसने पहले कभी नहीं देखा था। मगर उस आदमी ने उसे गले लगाया और कहा, 'मैं तुम्हें अपने सारे पापों से शुद्ध करता हूँ, और तुम आजाद हो। मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मुझ पर विश्वास करो।' ताहिर ने पूछाः 'क्या होगा अगर मैं दुबारा पाप करूँ तो?' गधे पर सवार उस व्यक्ति ने दुबारा उन्हीं शब्दों में उत्तर दियाः 'मैं तुम्हें अपने सारे पापों से शुद्ध करूँगा।" फिर वह व्यक्ति वहाँ से चला गया और ताहिर स्तब्ध रह गया। उसके ख्वाब में एक और आदमी उसकी तरफ आते देखाः 'क्या गधहे पर सवार उस आदमी को पहचानते हो?' उस आदमी ने पूछा। 'नहीं, मैं नहीं जानता', ताहिर ने उत्तर दीया। 'वह यीशु मसीह है,'

आदमी ने उत्तर दिया, 'वह तुम्हारे पापों को शुद्ध करता है।'

ताहिर नींद से जाग कर उस स्वप्न के बारे में सोचने लगा। दुबारा सो जाने पर उसे फिर से वही ख्वाब आया। दूबारा जाग कर उसे डर लगने लगा। 45 सालों से वह अल्लाह की सेवा कर रहा था। वह हाजी भी था .. - तो वह कैसे इस्लाम को छोड़ पायेगा? मगर जब वह सो गया तो तीसरी बार भी वही ख्वाब उस ने देखा। नींद से जाग कर उसको यकीन हो गया कि यीशु मसीह ही एक मात्र सच्चा परमेश्वर है।

ताहिर ने तो सच्चे परमेश्वर को खोजा, मगर फिर अगला कदम क्या होगा वह नहीं जानता था। गिरिजाघर में सारे लोग जानते थे कि उसने क्या किया था। मगर उसे आभास हो गया कि उसे चर्च में जाना होगा। अपने परिवार को जहाँ जाने से उसने मना किया था वहीं पर उसे जाना होगा। क्योंकि वहीं एक मात्र जगह वो जानता है जहाँ गधे पर सवार उस आदमी के बारे में उसको और जानकारी मिलेगा। बिचकते हुए उसने चर्च के प्राँगण में प्रवेश किया। उस समय उपस्थित इसाई उसे देख कर चौंक गये और साथ ही डर गये थे! क्या यहीं वो आदमी नहीं जिसने अपनी पत्नी, बेटे और बेटी को, मसीह को स्वीकारने के कारण मार डालने की धमकी दी थी?

'मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?' कलीसिया के एक अगुवा ने पूछा। उसका जवाब अनापेक्षित थाः 'मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ, चर्च में आना चाहता हूँ और अपना जीवन मसीह को सौंपना चाहता हूँ।' ताहिर ने कहा, 'मगर कैसे, मैं नहीं जानता हूँ।' वह नेता अचंभित रह गया और अब भी उसे यकीन नहीं था कि वह ताहिर पर विश्वास करे; वह सरकार का जासूस हो सकता है, ईरान में यह एक असाधारण बात तो नहीं है। ' मैं ने यीशु को अपने सपने में देखा था, मैं ने उसके चहरे को देखा था।' ताहिर ने विवरण दिया।

थोड़ा-थोड़ा करके चर्च के अगवे उस पर विश्वास करने लगे। ताहिर एक बच्चे की तरह था, मसीह के बारे में सीखने के लिए वह बहुत उत्सुक था। धीरे-धीरे उसे मसीह के बारे में सिखाने के बाद, यीशु के लिए अपने जान को जोखिम में डालकर वह सेवकाई में भाग लेने लगा। विदेश में उसका परिवार - जब से वे उसको छोड़कर चेले गये थे, उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे। उन लोगों ने ताहिर की जिन्दगी में आए बदलाव के बारे में सुना था। और अपनी प्रार्थनाओं का जवाब देने के लिए परमेश्वर की स्तुति की। और ताहिर को फिर अपनाया। प्रभु के एक सपने ने ताहिर के जीवन को तब्दील कर दिया।

-नाम को बदला गया। 'ऐ मोडार्ण डे पॉल इन ईरान' देखे।

माफी पाना और माफ करना

दूसरे महा -विश्वयुद्ध में जर्मनी ने हॉलैण्ड पर कब्जा किया था। उस दौरान, यहूदियों की मदद करने के जुर्म में कोरी टेन बूम को कैद किया गया था। बाद में, 'परमेश्वर मॉफ करते है,' यह संदेश लिए कोरी टेन बूम सन 1947 में जर्मनी गई थी। उसे लगा कि यही अति आवश्यक सच्चाई है, जो उनको सुनाना है। कडुवाहट से भरे उस बमबार देश को यही सच्चाई सुनाने के लिए उच्छुकता से वहाँ गई। अपने मन का, यही भावचित्र उन लोगों के सामने पेश किया, 'जब हम अपने पापों के लिए पश्चाताप करते है,' उसने कहा, 'परमेश्वर उन्हें अथाह महासागर में फेक देते है, और हमेशा के लिए दूर करते हैं। .... और मैं विश्वास करती हूँ तब परमेश्वर वहाँ एक साइन-बोर्ड भी खड़ा करते है, जिस में लिखा होगाः 'यहाँ जाल डाल पुरानी बातों को वापस पकड़ने की अनुमति नहीं है।

तब एक दिन संदेश के अंत में , कोरी ने, अपनी तरफ आते एक आदमी को देखा था। वह जाना-पहचाना लगा। नीले रंग की वर्दी, खोपड़ी और हड्डियों का चिह्न वाला टोपी पहने, उसको पहले देख चुकी थी। उस समय में, वह एक पहरेदार था - रेवन्सब्रक के सब से बेरहम पहरेदारों में से एक। रेवन्सब्रक, उत्तरी जर्मनी में स्थित एक कैदी शिविर है जहाँ कोरी और उसकी बहन बेटसी को कैद रखा गया था। बेटसी उसी हत्या शिविर में मर गयी थी।

हाथ मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाए वही अब उसके सामने खड़ा है। "एक बढ़िया संदेश था, शुश्री, जैसे आप कहती हो, यह बात जानना कितनी अच्छी बात है कि हमारे सारे पाप समुन्दर के तल में फेंक दिये गये हैं!"

सत्य की परख!

'यीशु ने उत्तर देते हुए उस से (उस स्त्री से) कहा, 'प्रत्येक जो इस जल में से पीता है, वह फिर प्यासा होगा, परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूँगा, अनन्तकाल तक प्यासा न होगा, परन्तु वह जल जो मैं उसे दूँगा उस में अनन्त जीवन के लिए उमण्डने वाला जल का सोता बन जाएगा।'

स्त्री ने उससे कहा, 'मैं जानती हूँ कि मसीह जो खीष्ट कहलाता है, आने वाला है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।' यीशु ने उससे कहा, 'मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।'(यूहन्ना 4:13-14, 25-26)

हजारों में से एक औरत - उसे वह पहचान नहीं पाया। फिर भी उसने क्षमा के बारे में बात की और अपनी संदेश के दौरान रेवेन्सब्रक का जिक्र किया था। 'मैं वहाँ एक पहरेदार था।' उसने कहा, 'मगर उस समय से,' उसने आगे कहा, 'मैंने मन फिराया और अब मैं एक ईसाई बन चुका हूँ। मैं जानता हूँ मैंने वहाँ निर्दयता से घोर क्रूर कामों को किया था, परमेश्वर ने मॉफ किया है। मगर मैं चाहता हूँ कि आपके होंठों से भी वह बात सुन लूँ, सुश्री,' हाथ आगे बढ़ाते, 'क्या आप मुझे मॉफ करोगी?'

कोरी , जो बार-बार मॉफी पाती थी, अब मॉफ करने के लिए संघर्ष कर रही थी। वह जानती थी कि उसे मॉफ करना होगा। 'यदि तुम मनुष्यों को क्षमा न करो,' यीशु कहते है, 'तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेगा।' नातसी क्रूरता के शिकार लोगों को भी वह जानती थी। उन में जिन लोगों ने उनको क्षमा किया है, वे अपने जीवन को पुनः निर्माण कर पाये और बाहरी दुनिया में शामिल हो पाये, और जो लोगों ने उनको क्षमा नहीं कर पाये, वे अपाहिज ही रह गये।

कोरी का दिल ठंड़ा पड़ गया। फिर भी, वह जानती थी कि क्षमा करना कोई मन की भावना नहीं है। वह अपनी इच्छा से करने वाला कार्य है। ऐसी इच्छा जो दिल को ठंड या सौहार्द बना दे। 'यीशु, मेरी मदद करो।' उसने मौन प्रार्थना की। 'मैं अपनी हाथ तो आगे बढ़ा सकती हूँ। मन में वह भावना आप ही प्रदान करो।'

निढाल और निर्भाव ही उसने हाथ से हाथ मिलाया। जैसा ही उसने ऐसा किया, मानो एक बिजली का झटका, काँधे से शुरू होकर मिले हाथों में तेजी से संचारित हुआ। सारे क्रोध को मिटाते एक स्वस्थ कर देने वाला सौहार्द भाव, मानो उसके अस्तित्व भर में छा गया। और उसकी आंखों में आँसू भर आये।

'मैं तुमको मॉफ करती हूँ, भाई' उसने कहा, ' अपने पूरे दिल से।'

लम्बे समय , पुराना एक कैदी और पुराना एक चौकीदार हाथ से हाथ मिलाए खड़े रहे। इससे पहले कॉरी ने कभी इतनी महत्ता से परमेश्वर के प्रेम को ना जाना था जैसे कि उस पल उसने अनुभव किया। फिर भी उसे एहसास हो गया कि वह उसका अपना प्रेम नहीं है। उसने कोशिश तो की थी, मगर उस में वह सामर्थ ना थी। जैसे कि रोमियों (5:5) में लिखा हुआ है, वह पवित्र आत्मा परमेश्वर का सामर्थ है - 'क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें, दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेला गया है।'

- कोरी टेन बूम का 'ट्रॉमप फर दा लॉर्ड' देखे।

ढूँढ़ने से

ईश्वर - अगर कोई परमेश्वर उपस्थित है - रात के अंधियारे में स्वर्ग की ओर हाथ बढ़ाये उठती यह पुकार - 'अगर आप यह सिद्ध करोगे कि आप मौजूद हो, और आप मुझे शान्ति देते हो, तो मैं अपनी पूरी जिन्दगी आप को सौंप दूँगी। अदृश्य उस परमेश्वर को बेजुबान, फुस फुसायी यह प्रार्थना और प्रतिज्ञा:'मैं वह सब कुछ करूँगी जो आप मुझसे कहते हो। आप जहाँ भेजते हो मैं वहाँ जाऊँगी और आजीवन मैं आपके आज्ञाओं का पालन करूँगी।'

परेशान पहलू:

राजपथ को छोड़कर धुंधले मैदानों पर इसाबेल का उतरना - जहाँ से व्यक्ति ऊपर परमेश्वर की तरफ देखता है और उसे ऊपर आने का बुलावा दिया जाता है। एक प्रोफेसर की बातों से प्रभावित होकर उसके जीवन में यह गिरावट शुरू हुई थी। 'उत्पत्ति की मिथ्या' पर अब कोई विश्वास नहीं कर रहा है, उस प्रोफेसर ने कहा था, स्वर्ग, नरक और उत्पत्ति की कहानी पर विश्वास करने वालों को अपना हाथ ऊपर उठाना था। और सिर्फ इसाबेल और एक और ने ऐसा किया था। प्रोफेसर मुस्कुराते कहाः 'ओ, तुम्हारे माँ-बाप ने ऐसा कहा था और इसीलिए तुम उन बातों पर विश्वास करते हो।'

उस दिन से इसाबेल ने तय किया कि जब तक व्यक्तिगत रूप से परख ना ले वह जीवन के किसी भी सिद्धांत पर विश्वास नहीं करेगी। हाँलाकि उसने बचपन में प्रार्थनाओं का जवाब मिलते अनुभव किया था, मगर अब वह अपने आप को एक संशयवादी मानने लगी। मगर फिर अब भी यीशु का नाम 'मरहम की तरह' है। बाद में वह लिखती, वह नाम 'इत्र की तरह' छा जाता है कि कोई भी एक पल थामे सिर उठाये गहरी सास लेने पर मजबूर हो जाता है। उनका नाम एक मधुर तराना जो मैं जानती थी, हाँलाकि मैं ने उसको खोजना छोड़ दिया था, वह मेरे हृदय में हलचल मचाने में कभी विफल नहीं हुआ था। उनकी पवित्रता और शुद्धता ने, मुझे अपने जीवन को मैले करने वाले चीजों से घृणा करने के कारण रहे हैं।

एक विद्यार्थी , अभिनेत्री, और नृत्य से प्रेम करने वाली इसाबेल का जीवन, बेन नामक युवक से मंगनी के बाद और नीचे गिरता गया। जैसे की नबी यिर्मयाह ने लिखा है, 'इस कारण उनका मार्ग उनके लिए फिसलन भरा होगा। वे अन्धकार में खदेड़ दिए जाएंगे और उसमें गिर पड़ेंगे; क्योंकि मैं उन पर विपत्ति अर्थात उनके दण्ड का समय ले आऊँगा। यहोवा की यही वाणी है।' (यिर्मयाह 23:12)

जब इसाबेल को यह मालूम पड़ा कि बेन वफादार नहीं है और वह बेवफा ही रहेगा, उसने कहा था, 'तब हम अलग हो जाये।' बेन का उस धुंधले मैंदान यानी सांसारिक आदर्श थे। मगर इसाबेल तो मसीह को जानती थी और जो उनके आदर्शों है उनसे कम वालों से वह सन्तुष्ट होनेवाली तो ना थी। मगर वो ' उस फिसलन भरे अन्धकारमय रास्ते पर

चल रही है।' उसकी नींद भी उड़ गई है।

सन 1921 क्रिसमस से पहले उसका जीवन ऐसी हद पर पहुँच गया। उस नींद रहित मायूसी में परखने वाला (शैतान) आत्महत्या के विचार लेकर आया। वो अपनी ज़िंदगी के सब से अंधकारमय समय का सामने करने वाली थी। अगर उसे पता होता कि परमेश्वर ने एक ऐसे आदमी को उसके लिए तैयार किया है जिसका परमेश्वर के उच्चतम लक्ष्यों को पूरा करने का जुनून और उन्ही के आदर्शों से भरा है। अगर वह इस बात को जान जाती तो कितनी मानसिक व्यथा से वह बच जाती। 'मगर वह जरूरी था,' बाद में वह लिखती है, 'कि मैं पहले उस धुंधले मैदानों के खोखले वादों के मैल को अखिर तक पी जाऊँ, तभी मैं उनके लुभाने और चालाक आकर्षण से मुक्त हो जाऊँगी।'

तब एक अजीब बात घटी। उस दिन उसने 'डॉन्टे' का उद्धरण पढ़ लिया थाः 'इन ला सुआ ओलान्टदे ये नोस्त्रा पेस।' इस दुहरे अर्थ का इसाबेल ने अनुमान लगाया, 'उसकी इच्छा में ही हमारी शान्ति है।' अपने शयन कक्ष के अंधियारे में यह उद्धरण, मानो चारों तरफ लिखा हो, उसको ऐसा लगा। अगर परमेश्वर सचमुच उपस्थित है तो क्या होगा? वह उसकी इच्छा में तो नहीं चल रही है। क्या इसीलिए उसमें शान्ति नहीं है? तब उसके मन में वह विचार आया ... उपर्युक्त परमेश्वर को प्रतिज्ञा करना और प्रार्थना करना ... खोजनाः

जब वह उठ गयी तो सूरज की रोशनी खिडकी से चमक रही थी। इतनी शान्त आरामदायक नींद का उसने कई दिनों से अनुभव नहीं किया था। शान्ति छा गयी। उसने एक ---- किया था और परमेश्वर ने तो अपने हिस्से का भाग निभाया दिया। अब उसका हिस्सा अपनी पूरी जिन्दगी को सौंपना था, अगर परमेश्वर अपने आपको सिद्ध करे तो। इसी बीच वह परमेश्वर की खोज करे।

मगर परमेश्वर को कहाँ खोजे ? खोजने से क्या एक आदमी परमेश्वर का पता पा सकता है? इस बात का विश्वास ना करते सोपर ने आय्यूब से प्रश्न किया था। मगर इसाबेल के दिमाग में, एक नौजवान को ऐसा कहते अच्छी तरह से याद थाः 'वचन पढ़ने के द्वारा मैं ने परमेश्वर को ढूँढ पाया हूँ।'

इसलिए , मसीह के प्रचार का 'सुसमाचार के पत्री,' एक ठोस लेखन है। यह जानते हुए इसाबेल ने परमेश्वर को - यीशु मसीह के द्वारा खोजने का निर्णय किया। 'यीशु मसीह' जो परमेश्वर द्वारा निर्धारित और विहित मार्ग है। सुसमाचार की पत्रियों को पढ़े, जो यीशु ने कहा है वैसा करने की कोशिश करे और दुबारा प्रार्थना करते रहे।

उस सौदा करने के कुछ तीन महीनों तक इसाबेल ने कुछ असाधारण अनुभव तो नही पाया। मगर फिर एक दिन पूरी तरह से हताशा, घायल अहम, ऐसी घड़ी में थरथराते उसने प्रार्थना की 'हे परमेश्वर अगर आप मौजूद हो, कृपया मुझे शान्ति दो।' और कुछ बिजली जैसा उस में बहने लगा। वह बाहर, ऊपर से उसके अन्दर प्रवेश कर रहा था। उसने उसे यकीन दिलाया कि उसकी समझ और शान्ति के परे कुछ अलौकिक शक्ति है जो उससे संपर्क करता चाहती है। उसने दुबारा कभी ऐसा प्रार्थना नहीं की ... 'अगर आप मौजूद हो, ...'

फिर भी इसाबेल की प्रार्थना स्वार्थी ही थी। परमेश्वर ने उसे भी पूरी किया, उसे यह पाठ सिखाते जो वह कभी नहीं भूल पायेगीः घमंड के विजय और उसके गरूर की सन्तुष्टि जिसकी अनुमति परमेश्वर ने दी है, वे कभी शान्ति और आनंद नहीं दे पायेंगे। इस तरह का जीवन उसे कभी संतुष्ट नहीं करेगा। और परमेश्वर वही चाहते थे, जैसा कि वे कह रहे है, 'अगर तुम सोचते हो तुम को यही चाहिए, प्यारे, लो और लो।' और उसने वह झाग जैसा जीवन दबा-दबा के दिया।' बाद में इसाबेल लिखती है।

फिर जब इसाबेल एक बाइबल क्लास में हाजिर हो रही थी, एक प्रोफेसर के आमने-सामने आई। उसे एहसास था की उस प्रोफेसर का परमेश्वर के साथ एक सहज और निजी अनुभव रहा है। वहाँ उसकी मुलाकात अपने पिताजी के एक दोस्त सो हो गईः 'इसाबेल' उन्होंने कहा, 'तुम को यहाँ देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैं कुछ सात सालों से प्रार्थना कर रहा था।', लगभग सात सालों से ही तो था जब उसने सांसारिक चीजों के पीछे जाने का निर्णय किया था। 'मसीह के लिए तड़प से उस सज्जन का चेहरा दमक रहा है, इसने इसाबेल के मन की गहराइयों में हलचल मचा दी, क्योंकि अब भी उसकी आत्मा में व्यथा भरे समय है।

संतृप्त हुए, सेवा करना

परमेश्वर के वचन की सच्चाई से इसाबेल का पोषण किया गया। उस राज मार्ग पर उसके पैर पुनः स्थिर किये गये। परमेश्वर की ओर मुँह किये वह अब ऊपर चढ़ने के लिए तैयार थी। आने वाले सालों में, परमेश्वर अपनी उपस्थिति का भान उसे सिखाता, परमेश्वर का भय मानने वाले मसीहियों की सलाहों से आशीष देता, अपने उद्देश्यों को उस पर प्रकट करता और अब भी उसे पकड़े हुए संसारिक नुकीलों को मिटाता। इसाबेल के जीवन की दिशा को ही परमेश्वर ने पूरी तरह से बदल दिया, उसे तृप्त किया और अपनी सेवा करने उसे बुलाया।

- इसाबेल कहून का 'बाई सर्चिंग' पढ़ें।